समाजशास्त्र बी०ए० I

PAGE NO.:
DATE: / /

द्वैतीयक समूह —
(Secondary Group)

प्राथमिक समूह की आवश्यकता के कारण ही द्वैतीयक समूह की अवधारणा का विकास हो सका। द्वैतीयक समूह सभ्य और विकसित समाज की देन है। जहाँ सम्बन्धों में आत्मीयता एवं घनिष्ठता का अभाव पाया जाता है, तथा जीवन औपचारिकता से भरा होता है।

परिभाषा —

जार्ज०सी० होमन्स तथा किंग्सले डेविस — के अनुसार —
"द्वैतीयक समूहों को स्थूल रूप से सभी प्राथमिक समूहों के विपरीत कहकर परिभाषित किया जा सकता है।"
बीरस्टीड के अनुसार — "वे सभी समूह द्वैतीयक हैं जो प्राथमिक नहीं हैं"

ऑगबर्न एवं निमकाफ के अनुसार —

"द्वैतीयक समूह उन्हें कहते हैं। जिनसे प्राप्त अनुभवों में घनिष्टता का अभाव होता है आकस्मिक सम्पर्क ही द्वैतीयक समूह का सारतत्व होता है।"

द्वैतीयक समूह की विशेषताएँ —
द्वैतीयक समूह की निम्नलिखित विशेषताएं हैं —

① ये समूह जानबूझकर कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संगठित किये जाते हैं।
② इन समूहों में शारीरिक निकटता का अभाव पाया जाता है।
③ इनका आकार प्राथमिक समूहों की तुलना में काफी विस्तृत होता है।
④ इन समूहों में सदस्यों के उत्तर दायित्व सीमित होता है।
⑤ ये समूह व्यक्ति के जीवन के किसी पहलू विशेष से सम्बन्धित होते हैं। ये व्यक्तिगत किसी एक पक्ष को ही अवधारणा प्रभावित कर पाते हैं।

प्राथमिक एवं द्वैतीयक समूहो में

अन्तर — प्राथमिक एवं द्वैतीयक समूहो में निम्न अन्तर स्पष्ट होता है। जो निम्न प्रकार है

प्राथमिक समूह	द्वैतीयक समूह
1. आकार छोटा होता है	1. आकार बड़ा होता है
2. सदस्यो की संख्या कम होती है	2. सदस्यो की संख्या अधिक होती है।
3- सदस्यो में शारीरिक समीपता पायी जाती है	3- सदस्यो में शारीरिक समीपता हो भी सकती है नही भी
4- सदस्यो में स्थाई सम्बन्ध पाये जाते है।	4- सदस्यो में अस्थाई सम्बन्ध होते है
5- सम्बन्धो में निरन्तरता पायी जाती है।	5- निरन्तरता नही पायी जाती है
6- सभी लोगो के उद्देश्य एक ही होते है।	6. सभी अपने-अपने हितो में रुचि रखते है।
7. सम्बन्धो में घनिष्टता एवं आत्मीयता पायी जाती है।	7. इनमें घनिष्टता एवं आत्मीयता का अभाव पाया जाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया